414
H79

MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
आह्वानांक Call No. _____
अवाप्ति सं० Acc. No. 414

D
18/1

गांधी की तोप

भारत के सपूत जेल में

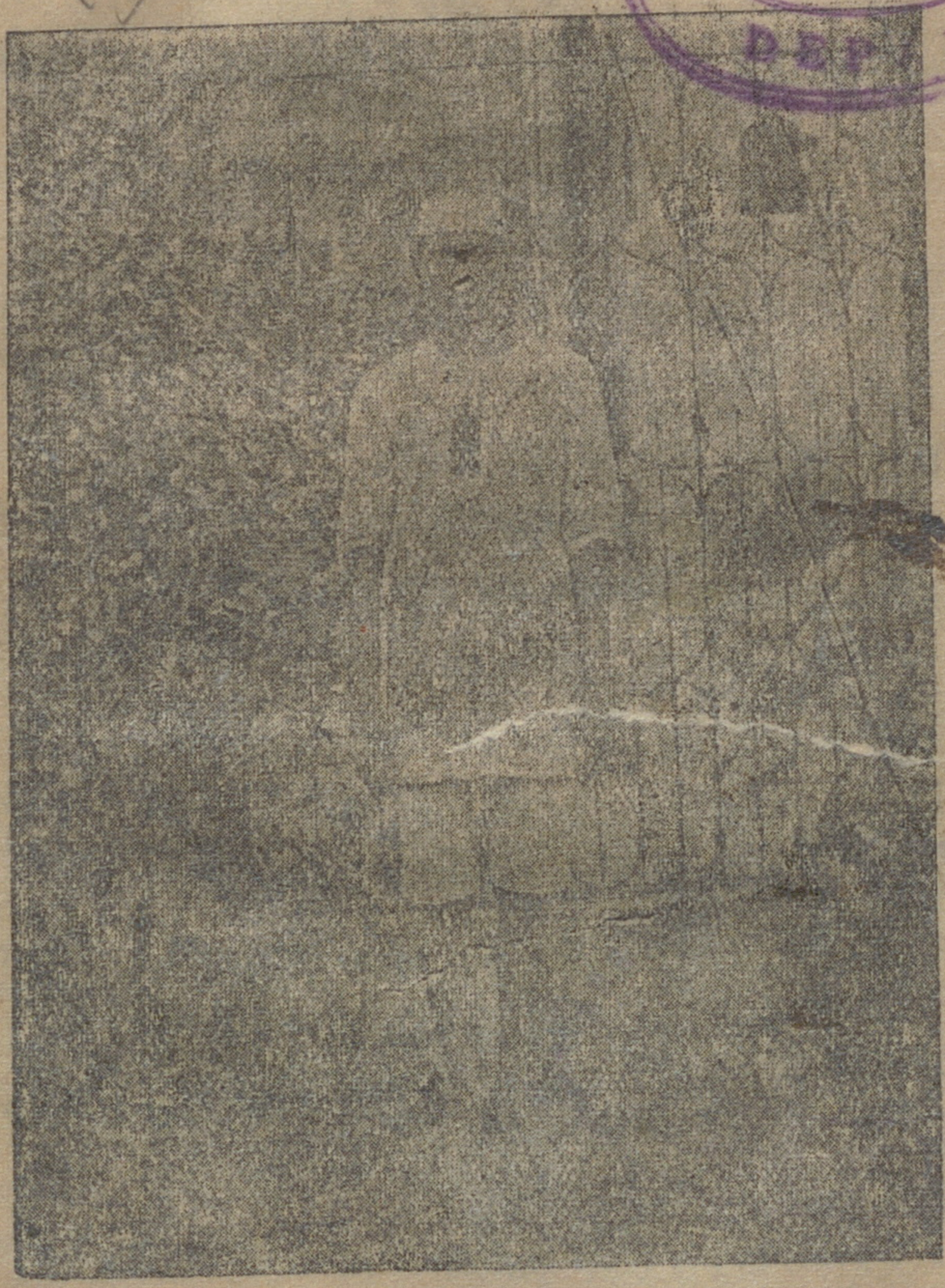

म० रामचन्द्र, सम्पादक "लाजपत" अलीगढ़ ।

शिवाजी प्रेस,, (सराय हकीम) अलीगढ़ में छपा ।

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 1931

891.431
L1489

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 414
Date 9:12:71
GOVT. OF INDIA

बीबी मुँहजोर

॥ घर में आई बीबी मुँह ओर ॥

ले आई पीहर से सँग में धूर्त अखोर बखोर ।
चाट गये बे दौलत घर की ऐसे चतुर चटोर ॥
खींचा धन धरती से कर के मिहनत ही का बोर ।
कमा कमा दिन रात थक गये जो कुछ धरा बटोर ॥
चुपके से सरका देती है बह पीहर की ओर ।
दिन भर चले रहे घर ही में ज्यों तेली के ढोर ॥
भूख लगी खाने को मांगा की बिनती कर जोर ।
खाली घड़ा रख दिया आगे ऐसी हृदय कठोर ॥
जो चुप रहूं बिगड़ता घर है यह संकट है घोर ।
कुछ बोलूँ तो त्योर बदलती निर्भय नाक सिकोर ॥
प्यार करूँ तो प्राण पियेगी मारेगी सुन शोर ।
रोऊं तो सब लोक हँसेगा जाऊँ किसकी पौर ॥
बादल गरजे बिजली तड़पे शीतल पवन झकोर ।
घुस बैठे बीबी के भाई घर में हमें न ठौर ॥
अब क्या करूँ नाक में दम है बीबी है मुँह ओर ।
हे भगवान इधर भी फेरो दया दृष्टि की कोर ॥

जेल मन्दिर

खुद जेल में जाकर बतलाया स्वराज्य का मन्दिर जेल में है।
जुज जेल के रस्ते कौन से हैं जब क़ौम का रहबर जेल में है॥
सब मुल्क के आदिल और दिमाग और हिन्दुस्तां के चश्माचिराग।
हर एक खिरदवर जेल में है माजी हर लीडर जेल में है॥
हर रिश्वतखोर व चुगलखोर हर ज़ालिम ऐश उड़ाता है।
बदतर से बदतर मौज में है बहतर से बहतर जेल में है॥
जिस दिल में था चिराग निहां थी हुब्बे वतन की आग जहां।
जो शख्स भी था बेलाग यहां उस शख्स का बिस्तर जेल में है॥
जब पांव पड़ी जंजीर नहीं और दिल में अपने हकीर नहीं।
तो जलील में गम की लकीर नहीं हर अफ़ज़ल बदतर जेल में है॥
खुद काम हो तुम बदनाम हो तुम नाकाम हो तुम कि गुलाम हो तुम।
बाहर है गुलामों का मसकन आज़ादों का घर जेल में है॥
है शेर बबर जो कोल का भी जिन्दाने बला के पिंजड़े में।
पाबन्द हबस बुज़दिल बाहर आज़ाद और रूफ़दर जेल में है॥
क्या उलटे तरीक़े निकले हैं इंसानों के एजाज़ के अब।
सब कंकड़ पत्थर सड़कों पर और लाल जवाहर जेल में हैं॥
ऐ बन्देमातरम् ऐ शैदा इक पुतला इस्तकलाल का है।
अभी सदहा और आमादा हैं गो महात्मा गांधी जेल में हैं॥
॥ खुद जेल में जाकर बतलाया स्वराज्य का मन्दिर जेल में है॥

सवेरा हो गया !

ऐ भाइयो ! उठो अब - देखो ये क्या हुआ है ।
उठने लगी है दुनिया - अब होगया सवेरा ॥ १ ॥
जिसमें पड़े पड़े तुम - सुख-स्वप्न देखते थे ।
वह मोह रात बीती अब हो गया सवेरा ॥ २ ॥
भागा है मुंह छिपा कर - दासत्व का अँधेरा ।
पूरब में लाली छाई - अब हो गया सवेरा ॥ ३ ॥
पंछी लगे सुनाने - स्वाधीनता के गाने ।
क्या ही समां बँधा है - अब हो गया सवेरा ॥ ४ ॥
तारे जो दूर से ही - थे रुमाल करते ।
वे हैं लगे खिसकने - अब हो गया सवेरा ॥ ५ ॥
झूठी चमक दिखाकर जुगनू ने नाम पाया ।
है दीखता न वह भी - अब हो गया सवेरा ॥ ६ ॥
उल्लू था मानों फौजी - कानून से डराता ।
अब कौन पूछता है - अब हो गया सवेरा ॥ ७ ॥
क्या क्या कहूं कि कैसा - दुनिया ने रंग पलटा ।
खुद उठके देखो तुम - अब हो गया सवेरा ॥ ८ ॥

सत्याग्रह के जल से - मुख कालिमा को धोलो।

लग जाओ काम में तुम अब हो गया सवेरा ॥ ९ ॥

यह कर्म-क्षेत्र तुम को - हँस हँस बुला रहा है।

करता न अब किनारा - अब होगया सवेरा ॥ १० ॥

बलिदान

जान में जब तक अपनी जान।

दो वह आत्मिक बल करुणानिधि - दबें न लख बलवान।

॥ जान में जब तक अपनी जान ॥

हमें डिगाने को यम आयें - अपना विकट रूप दिखलायें।

कभी न उनसे हम भय खायें - तजें न अपनी आन ॥ जान में०...

पथ में अगर पहाड़ अड़ा हो - चाहे जितना मार्ग कड़ा हो।

कभी न पीछे पैर पड़ा हो निभे सदा यह शान ॥ जान में० ॥

अगर रहे दृढ़ प्रण पर अपने होंगे सफल क्षुद्र छल सपने।

शत्रु लगें सब डरकर कंपने झुकें करें सम्मान ॥ जान में०

मातृ भूमि की वेदी पाकर सच्चा प्रेम मंत्र अपना कर।

हृदय कमल की भेंट चढ़ाकर हो जायें बलिदान ॥ जान में० ॥

दादरा

क़दर मेरी नाइ जानी सुनो भारत के नरनार।

नेह लगायो तुम मलमल से दीनी है मोय विसार ॥ १ ॥ क़दर...

पहम रफ़ल मन फूले डोलें मन में खुशी अपार ॥ २ ॥ क़दर...

ऊँच नींच का ख्याल करें ना मध भूलौ संसार ॥ ३ ॥ क़दर...
सर्ज सिलक का त्यागन कीजै जो चाहो उद्धार ॥ ४ ॥ क़दर...
जगन गुप्त कहै कोल निवासी तन लेउ खद्दर धार ॥ ५ ॥ क़दर.

गारी

॥ तर्ज ज्यौनार ॥

मिल चर्खा कातौ री देश हित हरे हरे देश हित सब सजनी ।
पीस कूट कर पानी भरलो चौका बर्तन करलो ।
खा पीकर और खिला पिलाकर फिर चरखा को धरलो ॥
सुनो भारत रमनी ॥ १ ॥ मिल चर्खा कातौरी...
घूम घूम कर चरखा बोलै कातै सूत बारीक ।
पाएदार इकसार कातना सब यों का त्यों ठीक ॥
अहो भारत भगिनी ॥ २ ॥ मिल चर्खा कातौरी...
पिता पुत्र को वस्त्र बनाओ चादर अपने लिए ।
मान मार दो वा मखमल के बिना खर्च के किए ॥
ऐसा कातौ सजनी ॥ ३ ॥ मिल चर्खा कातौरी...
इधर उधर की बातों में मत समय करो बेकार ।
चर्खा कातौ रुपये कमाओ होय देश उद्धार ॥
करौ जो शुभ करनी ॥ ४ ॥ मिल चर्खा कातौरी...

सत्याग्रही का तराना !

ग़ज़ल

करम के हीले से यह सितम है बफ़ा की छाती दहल गई है ।
किया है घर वास ने दिलों में दबक के हसरत निकल गई है ॥
जफ़ा पै क़ायम हैं वह जो अपनी तो हम वफ़ा पर अटल रहेंगे ।
क़सम न पछे पड़ेगा अपना कि आखिर अब उनसे चल गई है ॥
हमारे रोने पै उनका हंसना है ज़ख्मों पर यह नमक छिड़कना ।
वफ़ा के मौक़े पै बेवफ़ाई बतायें क्या कितना खल गई है ॥
जुनूँ है मुझको कि चारागर को बताए कोई खुदा का बन्दा ।
बढ़ी है जब मेरी नातवानी तो बेड़ी भो की डगमग गई है ॥
रहे जो हैं रास्ती पै क़ायम कभी नहीं उन पै आंच आई ।
अटल रहे क़ौल पर वो अपने मुसीबत आई तो टल गई है ॥
जली न सीता जली है लंका ये सत्य ही का असर है समझो ।
न आंच प्रहलाद पर कुछ आई और उल्टी होली ही जल गई है ।
करम के हीले से यह सितम है वफ़ा की छाती दहल गई है ॥

नोट—हमारे यहां सर्व प्रकार की छपाई होती है और राष्ट्रीय गान्नों की हर प्रकार की पुस्तकें मिलती हैं ।

पता—शिवाजी प्रेस, सराय हकीम अलीगढ़ ।